नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

लद्दाख में जल्दी से जल्दी शांति जरूरी

लद्दाख की धरती हमेशा से रणनीतिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत संवेदनशील रही है. हिमालय की दुर्गम चोटियों पर बसा यह इलाका न केवल भारत की उत्तरी सुरक्षा कवच का हिस्सा है, बल्कि इसकी सीमाएँ चीन और पाकिस्तान से सटी होने के कारण अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीति का केंद्र भी बनी रहती हैं. हाल के दिनों में यहां की आंतरिक परिस्थितियाँ और सीमा पर तनाव दोनों ही चिंता का विषय बनते जा रहे हैं. ऐसे में यह जरूरी है कि लद्दाख में शांति और स्थिरता को प्राथमिकता दी जाए, क्योंकि अस्थिरता से न केवल स्थानीय समाज प्रभावित होगा बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी असर पड़ेगा.

लद्दाख के परिदृश्य को समझने के लिए दो पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है—पहला, सीमा पर जारी खींचतान और दूसरा, स्थानीय स्तर पर विकास व प्रतिनिधित्व से जुड़ी अपेक्षाएं. सीमा पर चीन के साथ गतिरोध के बाद से क्षेत्र में सैन्य गतिविधियाँ बढ़ी हैं. सैनिक चौकियों का विस्तार, सड़क और पुलों का निर्माण और लगातार गश्त की वजह से यहाँ का माहौल तनावपूर्ण बना हुआ है. यह सच है कि हमारी सेनाएं मजबूती से तैनात हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है, लेकिन लंबे समय तक तनावपूर्ण स्थिति बने रहने से आम नागरिकों के जीवन और आर्थिक गतिविधियों पर दबाव बढ़ता है. दूसरा पहलू स्थानीय जनता से जुड़ा है. 2019 में लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा मिलने के बाद लोगों को उम्मीद थी कि यहां प्रशासनिक तेजी और विकास की नई संभावनाएं खुलेंगी. शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और आधारभूत संरचना में सुधार की दिशा में कुछ सकारात्मक कदम भी उठे हैं. लेकिन स्थानीय समाज की चिंता यह है कि उनकी पहचान, संस्कृति और भूमि अधिकारों को पर्याप्त कानूनी संरक्षण नहीं मिला है. स्थानीय संगठनों द्वारा समय-समय पर उठाई जाने वाली आवाज यही बताती है कि प्रशासनिक संवाद और जनभागीदारी को और गहरा करने की आवश्यकता है. इन दोनों परतों को जोड़कर देखें तो लद्दाख की स्थिति केवल सैन्य या राजनीतिक नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है. यहां शांति बहाली का अर्थ केवल सीमा पर तनाव कम करना नहीं है, बल्कि स्थानीय जनता को विश्वास में लेना भी है. इसके लिए कुछ ठोस कदम जरूरी हैं.

सबसे पहले, केंद्र सरकार को लद्दाख की प्रतिनिधि संस्थाओं और नागरिक समाज के साथ नियमित संवाद कायम रखना चाहिए. विकास योजनाएं तभी प्रभावी होंगी जब उनमें स्थानीय अनुभव और प्राथमिकताओं को जगह दी जाएगी. दूसरा, भूमि और रोजगार से संबंधित आशंकाओं को दूर करने के लिए विशेष कानूनी और प्रशासनिक प्रावधान करने होंगे. तीसरा, पर्यटन और पारिस्थितिक संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाते हुए आर्थिक अवसर बढ़ाने की दिशा में ठोस नीति बनाई जाए.जहां तक सीमा की स्थिति का प्रश्न है, शांति का रास्ता संवाद और राजनयिक प्रयासों से ही निकलेगा. भारत को अपनी दृढ़ सुरक्षा नीति जारी रखते हुए भी इस क्षेत्र को बारूद के ढेर पर बैठे रहने से बचाना होगा. सीमावर्ती इलाकों में बुनियादी ढांचे का विकास जरूर होना चाहिए, लेकिन साथ ही वहां रहने वाले नागरिकों के जीवन को सहज बनाने के उपाय भी समानांतर चलें.लद्दाख के लोग अपनी वीरता, सहनशीलता और संस्कृति के लिए जाने जाते हैं. वे भारत की अखंडता के प्रहरी हैं. उनकी उम्मीदें और आकांक्षाएं पूरी तरह देशहित से जुड़ी हुई हैं. इसलिए शांति बहाली के प्रयास केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए. समय रहते संवाद, विश्वास और विकास का रास्ता अपनाकर ही लद्दाख में स्थायी शांति और प्रगति सुनिश्चित की जा सकती है.

राष्ट्र जागरण की साधना के सौ वर्ष की यात्रा

हितानंद शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा वास्तव में राष्ट्र जागरण की ध्येय यात्रा है. वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर के मोहिते बाड़ा में रोपा गया राष्ट्र साधना का छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है. राष्ट्र प्रथम के एकनिष्ठ भाव के साथ किए जा रहे सतत और अनथक प्रयासों से संघ की पहचान आज विश्व के सबसे बड़े संगठन के रूप में बनी है. राष्ट्र, संस्कृति, धर्म एवं समाज के हित में सर्वस्व अर्पण कर देने वाले स्वयंसेवक भारत के पुनरुत्थान की साधना में निरंतर लगे हुए हैं. संघ शताब्दी वर्ष चरैवेति-चरैवेति के मंत्र के साथ बढ़ रहे वैचारिक अधिष्ठान का एक सोपान है.

संघ के आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य भारत को स्वाधीन बनाने के साथ ही स्व-बोध की चेतना से युक्त एक संगठित समाज का निर्माण करना था. माँ भारती को परम वैभव पर आसीन करने की 100 वर्षों की यह यात्रा सरल नहीं रही. अनेक कठिनाइयों, विरोधों और बाधाओं को ही मार्ग बनाते हुए संघ ने भारत माता की सेवा में व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य सतत जारी रखा है.

> आज जब भारत नए आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ विश्व मंच पर स्वाभिमान और स्व-बोध के गौरव के साथ खड़ा है, तब संघ की यह सौ वर्षीय यात्रा केवल एक संगठन की कथा नहीं, बल्कि उस विचार की गौरव गाथा है जिसने राष्ट्र को आत्मबोध, संगठन और संस्कृति की शक्ति से जोड़ा. इस अवसर पर प्रत्येक स्वयंसेवक और नागरिक को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह भारत माता को परम वैभव पर आसीन करने में अपना योगदान देंगे. सभी स्वयंसेवकों और देशवासियों को संघ शताब्दी वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं.

स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के पश्चात संघ ने समाज को देश की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया. स्वतंत्रता के पश्चात् भी जब देश में औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित और गुलाम पीढ़ी तैयार करने वाली मैकाले शिक्षा पद्धति जारी रखी गई तब संघ प्रेरणा से 1952 में 'विद्या भारती' की स्थापना की गई, जो शिक्षा एवं संस्कार देने वाला आज विश्व का सबसे बड़ा अशासकीय शैक्षणिक संगठन है. युवाओं को राष्ट्रीय विचारों से जोड़ने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, श्रमिकों के हित में कार्य करने भारतीय मजदूर संघ, किसानों के लिए भारतीय किसान संघ, सेवा कार्यों के लिए सेवा भारती और संस्कार भारती आदि अनेक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से स्वयंसेवकों द्वारा स्थापित किए गए जो आज भी समाज में सक्रियता से कार्य कर रहे हैं. 1936 में स्थापित राष्ट्र सेविका समिति के साथ मिलकर संगठन ने महिलाओं की भूमिका को भी समान महत्व दिया है. आज विचार परिवार के प्रत्येक संगठन में महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति इसी दृष्टिकोण का परिणाम है.

स्वतंत्रता के पश्चात् जब भारतीय राजनीति अपने मूल और दिशा से भटकने लगी, देश की संप्रभुता के लिए ही संकट उत्पन्न हो गया, तब पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की. भारतीय जनसंघ आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित हुआ. भारतीय जनता पार्टी वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है. इसे एक ऐसे संगठन के रूप में भी समाज का सम्मान प्राप्त होता है, जिसने अपने गठन के समय से चले आ रहे लगभग सभी प्रमुख संकल्पों को पूर्ण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है. जम्मू-कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना इसी विचारधारा के ऐतिहासिक कार्य हैं.

संघ की सौ वर्ष की यात्रा कठिन चुनौतियों से भरी रही है. संघ अपने आरंभिक काल से ही अपनों के ही विरोध, आक्रमण, उपहास और अपमान सहकर भी इस अनवत यात्रा में आगे बढ़ा है. महात्मा गांधी की हत्या के मिथ्या आरोप, दो बार लगाए गए प्रतिबंध, आपातकाल की असहनीय यातनाएं और तमाम विरोधों के पश्चात भी संघ अपने संकल्पों पर दृढ़ रहा. इस साधना की यज्ञ वेदी में असंख्य स्वयंसेवक समिधा बन कर होम भी हुए हैं. स्वयंसेवकों की तपस्या और प्रचारकों के समर्पण ने संगठन को उस स्थिति तक पहुंचाया, जहां आज विश्वभर में लोग संघ को निकट से जानना और उससे जुड़ना चाहते हैं. भारत के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास, संस्कृति, ज्ञान-परंपरा के संघरूपी वटवृक्ष की जड़ें गहरे तक समायी हुई हैं. संघ की शाखाएं संगठन का सबसे प्रबल पक्ष हैं. समाज में यह वाक्य प्रचलन में भी आ चुका है कि यदि संघ को समझना है तो शाखा में जाकर भलीभांति समझा जा सकता है. संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की नर्सरी भी कही जाती हैं.

(लेखक भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं)

संघ भारतीय समाज में अपनी गहरी छवि बनाने में सफल रहा है.

भारतीय संस्कृति के संरक्षक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सौ साल

भूपेन्द्र सिंह
पूर्व गृहमंत्री, विधायक

माँ भारती के वैभव को पुर्नप्रतिष्ठित करने, गुलामी की मानसिकता से उबारने और सांस्कृतिक चेतना जागृत करने के उद्देश्य से नागपुर शहर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 27 सितंबर 1925 को विजयदशमी के दिन एक छोटे से प्रयास के रूप में रा.स्व.से.संघ की शुरुआत की थी. सौ वर्षों की इस अविस्मरणीय यात्रा में संघ ने सेवा, समर्पण और संगठन के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण में अद्वितीय योगदान दिया है. संघ ने स्वतंत्रता के पूर्व ही समाज में आत्म गौरव का भाव जगाया, भारत को राष्ट्र-चेतना दी और वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन से विश्व शांति, एकता एवं सद्भाव का संदेश दिया. संघ के लिए ''राष्ट्र प्रथम है''

1925 में स्थापना के समय रा.स्व.से.संघ का उद्देश्य था - भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण, सामाजिक समरसता का निर्माण और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी. यह संगठन भारतीय संस्कृति के संरक्षण और पुनरुद्धार का एक मजबूत स्तंभ बनकर उभरा. संघ भारतीय समाज में अपनी गहरी छवि बनाने में सफल रहा है, उसने देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को भी गहराई से प्रभावित किया है. रा.स्व.से.संघ का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन और प्रचार है. विभिन्न सनातनी उत्सवों पर सामाजिक समरसता के माध्यम से संस्कृति को जीवंत बनाए रखने का प्रयास करते हैं.

सौ वर्षों की इस यात्रा में रा.स्व.से.संघ ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन उसकी मूल भावना और उद्देश्यों में कोई भी परिवर्तन नहीं आया है. भले ही हमारी पूजा पद्धति भिन्न हो सकती हैं, परंतु संस्कार तो समान ही रहने चाहिए. इसी विचारधारा के चलते आज संघ देश के कोने-कोने में पहुंचने में सफल रहा है. पिछले 100 वर्षों से सतत रूप से हिंदू सनातन संस्कृति एवं भारतीय परम्पराओं तथा संस्कारों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए माँ भारती की सेवा में अपने आप को समर्पित किए हुए है. आज भारत व सम्पूर्ण विश्व का हिंदू अपने आप को गर्व से हिंदू कह रहा है तो यह संघ की अनथक तपस्या का ही परिणाम है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष केवल उपलब्धियों की सूची भर नहीं, बल्कि भारतीय समाज के उत्थान, राष्ट्रीय व्यक्तित्व निर्माण और वैश्विक संस्कृति के पुनर्निर्माण की प्रगतिशील यात्रा है. संगठन की दृष्टि, सेवा भावना, अनुशासन और मातृभूमि के प्रति समर्पण से भारत को आत्मनिर्भर, समरस और समृद्ध राष्ट्र बनाने का सपना साकार करने का दृढ़ संकल्प ही संघ की सबसे बड़ी उपलब्धि है. आरंभ से ही संघ ने जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा से ऊपर उठकर भारतीय समाज को संगठित करने का प्रयास किया. शाखा के अभिनव प्रयोग से समाज में अनुशासन, समर्पण और राष्ट्रीयता की भावना पैदा हुई. संघ नई पीढ़ी को राष्ट्र भक्ति, संस्कार और सामाजिक सेवा के मूल्यों से जोड़ने में प्रयासरत हैं. डिजिटल युग में भी संघ की शाखाएँ सक्रिय हैं और नई तकनीकों का उपयोग कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं. संगठन का मानना है कि मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए मजबूत संस्कृतिवान और आत्मनिर्भर नागरिक आवश्यक हैं. इसके माध्यम से लाखों युवा प्रेरित होकर देश सेवा में जुटे हैं. संघ ने लाखों युवाओं को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया. शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में कई सफल अभियान चलाए. स्वयंसेवक आपदा राहत और सामाजिक सुधारों में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं. सौ वर्षों की इस यात्रा में रा.स्व.से.संघ ने कई चुनौतियों का सामना किया परंतु संगठन ने अपनी मूल भूमिका में स्थिरता बनाए रखी, अपनी गतिविधियों को विस्तार दिया. आज, रा.स्व.से.संघ ने एक मजबूत सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में अपनी पहचान बनाई है.

आज संघ स्थापना का 100वां वर्ष धूमधाम से मना रहा है और वह दुनिया को यह संदेश दे रहा है कि संघ भारत का एक ऐसा संगठन है जो अपनी स्थापना के दशकों के बाद भी अपनी विचारधारा व उद्देश्यों से जरा भी नहीं भटका है. शताब्दी वर्ष में संघ का समाज में पंच परिवर्तन लाने पर विशेष ध्यान है. इसमें ''सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, स्वदेशी जीवनशैली और नागरिक कर्तव्य'' शामिल हैं. इन पंच परिवर्तन से सामाजिक जीवन में अनुशासन, देशभक्ति और नागरिक सहभागिता बढ़ेगी. इससे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और राष्ट्रोन्नयन की आधारभूमि तैयार होगी. संघ के स्वयंसेवकों में स्वावलंबन,अनुशासन और सेवा भावना का विकास करने हुतु सतत प्रयास चलते हैं ताकि वे समाज की सेवा कर सकें. मुझे गर्व है कि आज भारत ही नहीं दुनिया में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसा सामाजिक संगठन होना दुर्लभ है जो अविरल अनथक रूप से समाज सेवा के साथ राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध है. वन्देमातरम्......

नाटकीयता का मोहरा बनी एशिया कप ट्रॉफी

एशियाई महाद्वीप में क्रिकेट से जुड़े दो चिर प्रतिद्वंद्वियों भारत-पाकिस्तान के मैच से जुड़ी खेल प्रतिद्वंद्विता सामान्यत: राजनीतिक तनाव के भार तले दबे रहती है. रविवार का एशिया कप फाइनल ड्रामा भी भू-राजनीति से उपजे तनाव का नवीनतम उदाहरण है, जहां नाटकीयता भरे माहौल में ट्रॉफी खुद एक तुच्छ नाटक का मोहरा बन गई. पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और एशियाई क्रिकेट के प्रमुख मोहसिन नकवी टीम इंडिया द्वारा उनके हाथों से पुरस्कार लेने से इनकार करने के बाद ट्रॉफी लेकर चले गए. पहलगाम आतंकी हमले के बाद टीम इंडिया ने पाकिस्तानी क्रिकेटरों से हाथ मिलाने से इनकार कर दिया, वह नकवी से कभी ट्रॉफी नहीं लेने वाली थी. एक ऐसे व्यक्ति से, जिसने टूर्नामेंट के दौरान भारत को उकसाया और खुद को अपने पद के अयोग्य साबित किया. यह जानते हुए कि मंच पर उनकी उपेक्षा की जाएगी नकवी ने भारत को पदकों तक पहुंच से दूर रखा, लेकिन भारत का जश्न कोई नहीं रोक सका. फाइनल से पहले के मैचों में पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने खुलेआम नकारात्मक प्रतीकात्मकता से जवाब दिया, जिसमें हारिस रऊफ ने मैदान पर एक गोता खाते लड़ाकू विमान की नकल की. इसे पाकिस्तान द्वारा भारतीय विमानों को मार गिराने के पहले के दावों के प्रति एक भड़काऊ इशारा माना गया. और तो और, साहिबजीदा फरहान ने बंदूक जैसी बल्ले की मुद्रा में जश्न मनाया, जिसके कारण उन पर जुर्माना लगाया गया और बीसीसीआई ने कड़ी आलोचना की. यह अलग बात है कि इस भींडे प्रदर्शन के दौरान फरहान भूल गए ि बंदूक यानी बैट के हैंडल का मुंह सामने की ओर रखना चाहिए था. उनका यह इशारा सेल्फ गोल ही साबित हुआ. पूरे टूर्नामेंट में दो टीमों ने एक-दूसरे से हाथ तक नहीं मिलाया और एक टीम प्रतियोगिता जीतकर भी खाली हाथ लौटी. इन सबके बीच 22 गज के मैदान में कुछ रोमांचक क्रिकेट हुआ, लेकिन उसके बाहर खेल हार गया था.

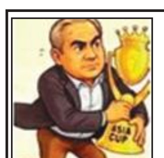

शायद नकवी यह भूल गए कि उनका बिल कौन भरता है. एसीसी प्रत्येक टेस्ट खेलने वाले देश को सालाना 15 मिलियन डॉलर से अधिक देता है. वास्तव में भारत के लिए यह जेब खर्च है, लेकिन इसके बिना पाकिस्तान क्रिकेट डूब सकता है.

-निहार रंजन सक्सेना

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ट्रंप का तलवा चाटते शहबाज-मुनीर चमचागिरी करने को दोनों अधीर

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, दोगलेपन की सबसे बड़ी मिसाल कोई है तो पाकिस्तान! पार्टीशन के पाप की नाजायज औलाद पाकिस्तान के 2 बाप हैं. एक चीन और दूसरा अमेरिका! इन दिनों पाकिस्तान के डमी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और वहां के असली हुक्मरान फील्ड मार्शल आसिम मुनीर वॉशिंगटन में ट्रंप के तलुए चाटने में लगे हैं. दोनों देशों की सरकार को तू झूठी में मक्कार कहा जा सकता है. ट्रंप जब 2016 से 2020 तक पहली टर्म में राष्ट्रपति थे तब उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान ने हमारे नेताओं को बेवकूफ बनाया. हमने 15 वर्षों में उसे 33 बिलियन डॉलर की मदद दी और बदले में उसने हमें झूठ और धोखाधड़ी के सिवाय कुछ नहीं दिया. 2024 से शुरू ट्रंप के दूसरे टर्म में उनका नजरिया बदल गया.

उन्होंने शहबाज शरीफ को महान नेता तथा मुनीर को बहुत महान व्यक्ति या वेरी ग्रेट गाय कहा! ट्रंप ने आतंकवाद से लड़ने के लिए पाकिस्तान की तारीफ की जबकि आतंक की सबसे बड़ी फैक्टरी खुद पाकिस्तान है.

शहबाज ने कहा कि हम केवल नोबल शांति पुरस्कार के लिए ट्रंप का नाम ही प्रस्तावित कर सकते हैं.

हमने कहा, पाकिस्तान में सेना और प्रधानमंत्री शहबाज की हायब्रिड या संकरित सरकार है. अमेरिका को ऐसे ही दोगले चमचे पसंद आते हैं. पहले भी कहा जाता था कि पाकिस्तान को अल्लाह, आर्मी और अमेरिका चलाते हैं. ट्रंप को अब भी भ्रम है कि चीन के खिलाफ पाकिस्तान उसकी चौकी का काम कर सकता है. अमेरिकी वायुसेना पाकिस्तानी एयरबेस का इस्तेमाल कर सकती है.

दूसरी ओर चीन ने भी चील की तरह पाकिस्तानी चूहे को अपने चंगुल में फंसा रखा है. उसने चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर 70 अरब डॉलर का निवेश किया है. ग्वाडर बंदरगाह भी पूरी तरह से चीन के कब्जे में है. शी जिनपिंग एक घुड़की देंगे तो पाकिस्तान की पतलून गीली हो जाएगी. एक साथ चीन और अमेरिका दोनों से चिपकने का नतीजा पाकिस्तान को कभी न कभी भुगतना पड़ेगा. कंगाल पाकिस्तान करे भी तो क्या? वह दोनों देशों के सामने भीख का कटोरा लेकर खड़ा रहता है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12038 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. मेल का न होना, अनौचित्य (सं.) 2. स्तर, किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल 3. ईसाई, भिक्षुणी (अं) 4. झगड़ा, लड़ाई 5. भारयुक्त होना, रखा जाना 8. बांह और भुजा का मोड़ 10. घरौंदा (उर्दू) 12. चांदी का पहाड़ (सं.) 14. मग्न, लीन 15. आमिष भोजन करने वाला 16. पूर्णतया ज्ञात 17. निषध देश का राजा जिसका विवाह दमयंती से हुआ था 18. खेत की रखवाली या शिकार खेलने के लिए चार लट्ठों पर बनाया गया ऊंचा स्थान 19. अगर का पेड

बाएं से दाएं
1. असदृश, जो बराबर न हो 4. एक मुनि जिसने सगर राजा के पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया था, अग्नि 6. महात्मा, सज्जन 7. पांडवों में से एक 9. गहरा 11. कांपना, थरथराना 13. शेर की मादा 15. विपत्ति, दुर्भाग्य, (उर्दू) 16. सुरीला, सुंदर (सं.) 18. घर, निकेत 19. दृढ़, स्थिर 20. एक जल-पक्षी जिसका शरीर फूलदार होता है 21. कठोर हृदय (उर्दू) 22. नली, औरत 23. ऋतु 24. प्रियतम, कांत, पपीहे का शब्द

Solution 12037

प	र	का	र		पो	ख	र
चा	या		मं	दि	नी		सा
सा		कु	श	ल		आ	य
	गु	रु			म	न	न
अ	मा	प		प	द्य		शा
क	र		अ	स्त		व	स्त्र
थ		दा	म		र	स	ज्ञ
	आ	न	न	फा	न	न	

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र अथवा व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा, शासन से लाभ प्राप्त होने का योग है, वर्ष के मध्य में शत्रु वर्ग प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में व्यर्थ वाद विवाद से बचने का प्रयास करें, यात्रा में कष्ट होगा, शारीरिक चिन्ता और मानसिक कष्ट होगा, पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्वजनों से मतभेद हो सकता है, मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में परेशानी के बाद लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कल्पनाप्रिय होगा, साहसी और निडर रहेगा, इसकी शिक्षा उत्तम होगी, किसी विशेष तकनीकी विद्या का ज्ञाता होगा, अपने लक्ष्य के प्रति निश्चयी होगा, पिता का भक्त रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

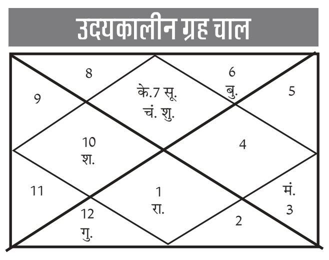

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2082 आश्विन शुक्ल नवमीं बुधवासरे दिन 2/37, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे दिन-रात, अतिगण्ड योगे रात 10/54, कौलव करणे सू.उ. 6/6, सू.अ. 5/54, चन्द्रचार धनु दिन 11/28 से मकर, शु.रा. 10, 12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल नवमीं को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में मंदी होगी, गुड़ खांड, शक्कर, उड़द, के भाव में वृद्धि होगी, कपास, सरसों, तिल, बिनौला, में वृद्धि होगी, वायदा मार्केट में बाजार का रूख देखकर कार्य करें, भाग्यांक 3657 है.

मेष- कारोबारी विस्तार की संभावना है, आय में वृद्धि होगी, परन्तु अनावश्यक धन खर्च होगा, मित्रों से मतभेद हो सकता है, व्यापारिक लेनदेन के मामले सुलझेंगे.

वृषभ- कामकाज की व्यस्तता रहेगी, इच्छानुसार कार्य होंगे, भ्रमण मनोरंजन के साधनों में वृद्धि होगी, संतान की उन्नति होगी. लाभ होगा.

मिथुन- सामूहिक कार्य में सबकी सलाह लेकर आगे बढ़े, सफलता मिलेगी, व्यर्थ की चिन्ता दूर होगी, कार्यो में इच्छित सफलता मिलेगी. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा.

कर्क- न चाहते हुये भी समझौता करना पड़ सकता है, पारिवारिक सुख एवं साधनों में वृद्धि होगी, व्यवसाय क्षेत्र में सफलता के योग है.

सिंह- मेहमानों की आवाजाही रहेगी, झूठ बोलकर लोग भ्रमित करेंगे, कार्यक्षेत्र में लाभ होगा, धैर्यएवं नम्रता से सहयोग मिलेगा, तनाव से बचें.

कन्या- दुविधा की स्थिति आगे बढ़ने में बाधक होगी, अपनों के कारण मुश्किल हो सकती है, आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, नौकरी में परिश्रम होगा.

तुला- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के आसार हैं, आय में वृद्धि होगी, मित्रों की मदद करेंगे, नौकरी में परिश्रम अधिक रहेगा, प्रवास का योग है.

वृश्चिक- सहयोगी आपकी कार्य कुशलता और मेहनत का लाभ उठायेंगे, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, व्यापारिक शिथिलता रहेगी, शुभ संदेश मिलेगा.

धनु- नई योजनाओं की शुरूआत में परेशानी हो सकती है, ले देकर काम कराने की कोशिश सफल होगी, स्वास्थ्य नरम गरम रह सकता है.

मकर- जिद में आकर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, जोखिम से दूर रहें, धार्मिक कार्यो में लगन एवं रूचि रहेगी. प्रयासों में अनुकूलता रहेगी.

कुम्भ- कार्यक्षेत्र में समझौता करना लाभकारी रहेगा, विवादित मामले सुलझने के आसार हैं, नौकरी में अनुकूलता रहेगी, सामाजिक कार्यो में मान सम्मान मिलेगा.

मीन- नए संपर्क कैरियर बनाने में सहायक हो सकते हैं, दुविधा की स्थिति दूर होगी, स्थायी प्रयासों मेंधन प्राप्त होगा, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

SUDOKU 7170

					1	4		
	9					5	8	
			7	9				
			2				6	7
4								3
5	8				9			
				8	5			
	7	6					1	
		9	3					

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7169

7	8	9	2	3	1	6	5	4
3	2	4	6	5	9	7	8	1
6	5	1	8	4	7	2	9	3
5	1	7	3	9	8	4	6	2
4	6	8	5	1	2	9	3	7
9	3	2	4	7	6	8	1	5
1	4	6	9	2	3	5	7	8
2	9	3	7	8	5	1	4	6
8	7	5	1	6	4	3	2	9